RNI No. RAJHIN/2014/58645
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY/280/2015-17
e-paper : www.srushtiagronews.com

सब्जियों का सीजन
नुन्हेम्स के संग

सृष्टि एग्रो

वर्ष -4 | अंक-13 | जयपुर 16 से 30 सितंबर 2017 | मूल्य - 2 रुपए | पाक्षिक | पृष्ठ-8

किसानों के 50 हजार तक कर्ज माफ

जयपुर (कासं)। राज्य सरकार के खजाने पर 20,000 करोड़ रुपये का बोझ पड़ने का अनुमान देश में कृषि ऋण माफ करने वाले राज्यों की फेहरिस्त में राजस्थान भी शामिल हो गया है। राज्य सरकार ने किसानों के ऋण माफ करने की घोषणा की। किसानों के साथ चली लंबी बैठक के बाद राज्य सरकार ने प्रत्येक किसान के 50,000 रुपये तक के सभी कृषि ऋण माफ करने की घोषणा की। किसानों के 13 दिनों के प्रदर्शन के बाद आखिकर राज्य सरकार को ऋण माफ करने के लिए विवश होना पड़ा। एक अनुमान के अनुसार ऋण माफी की रकम 20,000 करोड़ रुपये हो सकती है। मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने दूसरे राज्यों में कृषि ऋण माफी योजना के अध्ययन के लिए विशेषज्ञों की एक समिति का गठन किया है। समिति उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, केरल और अन्य दूसरे राज्यों कृषि ऋण माफी योजनाओं का अध्ययन करेगी और एक महीने के अंदर रिपोर्ट राज्य सरकार को सौंपेगी। राजस्थान में ऑल इंडिया किसान सभा ने आंदोलन की शुरुआत की थी। कथित गोरक्षकों के मवेशी कारोबारियों पर बढ़ते हमलों के आरोपों के संदर्भ में राज्य सरकार ने मवेशी कारोबारियों को सुरक्षा देने का भी वादा किया। एआईकेएस ने राज्य सरकार के सामने 11 सूत्री मांगों की सूची रखी थी। लगातार चले आंदोलन के बाद राज्य सरकार ने किसान सभा के नेताओं को बातचीत के लिए आमंत्रित किया था। बुधवार को दोनों पक्षों के बीच करीब 11 घंटे तक बैठक हुई और आधी रात के बाद राज्य के कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी ने सभी किसानों के 50,000 रुपये तक के ऋण माफ करने की औपचारिक घोषणा कर दी।

किसानों के कर्ज माफी के संबंध में उच्च स्तरीय कमेटी का गठन होगा

जयपुर। प्रदेश में किसानों के ऋण माफ किए जाने के सम्बंध में एक उच्च स्तरीय विशेषज्ञ एवं तकनीकी कमेटी का गठन किया जाएगा। राज्य सरकार के मंत्रीमण्डलीय समूह एवं किसान प्रतिनिधियों के बीच पंत कृषि भवन में समझौता वार्ता में इस कमेटी के गठन पर सहमति बनी।

यह कमेटी कर्ज माफी से संबंधित सभी पहलुओं पर सभी संबंधित पक्षकारों से विचार-विमर्श कर एक माह में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी। कमेटी उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, केरल तथा अन्य राज्यों द्वारा अपनाई गई प्रक्रिया का अध्ययन करेगी। साथ ही राजस्थान की परिस्थितियों के संदर्भ में पड़ने वाले प्रभाव का भी अध्ययन, परीक्षण एवं विश्लेषण कर रिपोर्ट प्रस्तुत करेगी।

वार्ता के दौरान मंत्रीमण्डलीय उपसमिति में कृषि मंत्री प्रभुलाल सैनी, जल संसाधन मंत्री डॉ. रामप्रताप, सहकारिता एवं गोपालन मंत्री अजय सिंह, ऊर्जा राज्यमंत्री पुष्पेंद्र सिंह, विधायक अशोक परनामी, अखिल भारतीय किसान सभा के प्रतिनिधि अमराराम, पेमाराम एवं अन्य सदस्यगण तथा राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने लॉन्च की राजस्थान के खेतों में उपजे जैतून से तैयार ऑलिव-टी

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने मुख्यमंत्री निवास पर राजस्थान के खेतों में उपजे जैतून से तैयार पहली प्रोसेस्ड ऑलिव टी 'ऑलिटिया' लॉन्च की। ऑलिव टी का यह उत्पाद ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट 2016 के दौरान राजस्थान सरकार तथा निजी कंपनी ऑलिटिया फूड्स के बीच हुए एमओयू के तहत तैयार किया गया है। श्रीमती राजे ने इस चाय की लॉचिंग करते हुए कहा कि इससे प्रदेश के किसानों द्वारा कड़ी मेहनत से उपजाए गये जैतून की गुणवत्ता को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहचान मिलेगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने प्रदेश में जैतून की खेती को बढ़ावा देने के लिए जो प्रयास पिछले सालों में किये हैं, उसके सार्थक परिणाम सामने आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे ही कदम उठाकर वर्ष 2022 तक प्रदेश के किसानों की आय को दोगुना करने के लक्ष्य तक पहुंचने में कामयाब होंगे। मुख्यमंत्री ने इस दौरान ऑलिव टी का स्वाद चखा तथा इसकी सराहना की। उन्होंने राजस्थान में तैयार हो रहे अन्य विश्वस्तरीय एग्री प्रोसेस्ड प्रोडक्ट भी देखे। हमारे मेहनतकश किसान भाइयों की उपज की विश्वस्तर पर मार्केटिंग के बेहतर प्रयास किये जाएं ताकि उन्हें इनके अच्छे दाम मिलें।

सम्पादकीय

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में सुंधार की गुंजाइश

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने खेती-किसानी से जुड़ी अपनी सरकार की एक अहम योजना प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना की आलोचना पर प्रतिक्रिया देकर अच्छा किया है। उन्होंने नीति आयोग से कहा है कि वह इसमें सुधार के तरीके सुझाए। इस योजना की शुरुआत अप्रैल 2016 में की गई थी और इसकी यह कहकर आलोचना की जा रही है कि इससे बीमा कंपनियों को फायदा हो रहा है, न कि किसानों को। आरोप है कि इन कंपनियों को भारी सब्सिडी के अलावा प्रीमियम में भी बड़ी हिस्सेदारी मिल रही है। दावों के रूप में किया गया भुगतान संग्रहीत प्रीमियम के एक चौथाई के आसपास ही है। अतीत में सेंटर फॉर साइंस ऐंड एन्वॉयरनमेंट (सीएसई) और नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (सीएजी) दोनों ने इसकी खामियों की ओर इशारा किया था। जाहिर सी बात है कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना में सुधार की काफी गुंजाइश है। इस बात की भी संभावना है कि अगर संशोधनों के साथ इसका उचित क्रियान्वयन किया जाए तो यह किसानों को अहम सुरक्षा मुहैया करा सकती है। ऐसा इसलिए क्योंकि यह इकलौती ऐसी योजना है जो खेती की तमाम समस्याओं से सुरक्षा दिलाती है। इसमें बुआई की दिक्कतों से लेकर फसल कटाई के बाद तक के नुकसान शामिल हैं। अगर इस योजना का हश्र भी पहले की तमाम योजनाओं जैसा होता है तो बहुत दुखद होगा। पुरानी योजनाएं या तो बंद हो गईं या फिर उनसे कोई सकारात्मक परिणाम हासिल नहीं हुए। पहला सुधार तो इस योजना के ढांचे में ही करना होगा। भले ही इस योजना को प्रधानमंत्री की योजना का नाम दिया गया हो लेकिन हकीकत में इस योजना में राज्यों को क्रियान्वयन के दौरान व्यय का 50 फीसदी साझा करना पड़ता है। इतना ही नहीं राज्यों से यह भी कहा गया है कि वे नुकसान के आकलन के लिए फसल कटाई का प्रयोग करें। ऐसे में आश्चर्य नहीं है कि राज्यों ने भी इस योजना में कोई खास रुचि नहीं दिखाई है। कई राज्य सरकारों ने लागत में अपना हिस्सा चुकाने में देरी की है। वे फसल-कटाई के प्रयोग में भी किसी तरह का खर्च नहीं करना चाहते और फसल को होने वाले नुकसान का आंखो देखा आकलन प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके अलावा आंकड़ों के त्वरित संग्रहण एवं वितरण के अलावा दावों के निपटान में तेजी के लिए ड्रोन और स्मार्ट फोन जैसी आधुनिक तकनीक का प्रयोग अपेक्षित गति से नहीं हुआ है। एक अन्य ध्यान देने लायक कमी यह है कि इसके क्रियान्वयन में बैंकों को भी साझेदार बनाया गया है। किसानों का बीमा कंपनियों से कोई खास सीधा संपर्क नहीं है। कई किसानों को तो उनके बीमा दस्तावेज या रसीद ही नहीं मिल सके हैं। हर्जाने में जो पैसा मिलना चाहिए उसे बैंक किसानों के कर्ज से समायोजित कर देते हैं। वहीं दूसरी ओर बीमा कंपनियों की शिकायत है कि उनको किसानों के रकबे और फसल बुआई आदि के बारे में सही और विस्तृत जानकारी नहीं मिल पा रही। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के समक्ष कुछ स्वाभाविक समस्याएं भी हैं। उदाहरण के लिए कमजोर भू-रिकॉर्ड, भ्रष्टाचार और वास्तविक खेती के बारे में अस्पष्टता। ऐसे में छोटे और सीमांत किसानों को इस योजना का लाभ दिलाने का क्या तरीका हो सकता है क्योंकि उनको इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है? नीति आयोग को इस योजना के तमाम अन्य पहलुओं का अध्ययन करते हुए शायद इसे एक केंद्रीय योजना में तब्दील करने पर भी विचार करना चाहिए। ऐसा करने से किसानों को उत्पादन संबंधी जोखिम से बचाने का इसका प्राथमिक लक्ष्य पूरा हो सकेगा।

'रबी सीजन में किसानों को दिया जायेगा 280 करोड रुपये का ब्याजमुक्त ऋण'

जयपुर (कासं)। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने कहा कि जयपुर जिले के लगभग एक लाख 50 हजार किसानों को रूपे डेबिट कार्ड वितरित किये जायेंगे। कार्ड वितरण से किसान अपने खाते से किसी भी समय किसी भी स्थान पर पैसे निकाल सकेगा। किलक सोमवार को जिले की सांगानेर पंचायत समिति की रामपुरा ऊँटी ग्राम सेवा सहकारी समिति लि. में सदस्य किसानों को रुपे कार्ड वितरण एवं समिति के गोदाम निर्माण के शिलान्यास समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने 20 किसानों को रूपे कार्ड वितरित कर जिले में कार्ड वितरण की शुरूआत की। उन्होंने कहा कि नागौर जिले से एक सितम्बर से रूपे डेबिट कार्ड के वितरण की शुरूआत हो चुकी है ओर पूरे प्रदेश में लगभग 26 लाख किसानों को रूपे डेबिट कार्ड वितरित होंगे। किलक ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री वसुधंरा राजे की मंशा है कि किसान के खाते में सीधा पैसा पहुंचे और निकासी की सुविधा सभी जगह उपलब्ध हो। सहकारिता मंत्री ने कहा की सभी ग्राम सेवा सहकारी समितियों को पोस मशीन से लैस किया जायेगा, जिससे किसानों को समिति के स्तर पर ही पैसे निकालने कि सुविधा प्राप्त हो सके। उन्होंने कहा कि वर्तमान सरकार ने अब तक 56 हजार करोड रू. से अधिक का ब्याजमुक्त फसली ऋण वितरित किया है जबकि पूर्ववर्ती सरकार ने 5 साल में मात्र 24 हजार करोड रू. का ऋण वितरित किया था। जयपुर जिले में किसानों को अब तक 500 करोड रुपये का ब्याजमुक्त फसली ऋण बांटा गया है तथा रबी सीजन में 280 करोड रुपये का और ब्याजमुक्त ऋण का वितरण किया जायेगा। उन्होंने कहा कि जिले में लगभग 10 हजार नये किसान सदस्यों को पहली बार ऋण वितरित किया जा रहा है। संसदीय सचिव कैलाश वर्मा ने कहा कि मुख्यमंत्री श्रीमती वसुधंरा राजे के नेतृत्व में राज्य में विकास की गंगा बह रही है पहली बार सहकारिता के माध्यम से किसान लाभान्वित हो रहे है।

प्याज का अधिक उत्पादन की वैज्ञानिक तकनीकियां

डॉ. लालाराम शस्य वैज्ञानिक एवं डॉ. बनवारी लाल आसीवाल प्रसार वैज्ञानिक,
भरतिया कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर (सीकर)

प्याज एक नगदी फसल है जो इस जिले की मुख्य फसलों में गिनी जाती है। प्याज विटामिन -'सी' फास्फोरस का अच्छा स्त्रोत है। प्याज सलाद, सब्जी आचार व मसाले के रूप में प्रयोग किया जाता है। गर्मी में लू लग जाने तथा गूर्दे की बीमारी वाले रोगियों के लिए बहुत ही उपयोगी है। प्याज हेतु न अधिक गर्म व न अधिक ठण्ड वाले क्षेत्र उपयुक्त हैं, अच्छे कन्द बनने के लिए लम्बा दिन तथा कुछ अधिक तापमान होना अच्छा है। आमतौर पर उपजाऊ दोमट बालुई दोमट पर्याप्त जीवांश खाद वाली भूमि प्याज के लिए अच्छी रहती है। अधिक क्षारीय व अम्लीय भूमि में गंधक की कमी हो तो 400 किलो जिप्सम प्रति हैक्टर की दर से खेत की अंतिम तैयारी के क्रम से कम 15 दिन पूर्व मिलायें।

उन्नत किस्में:

लाल: पूसा रेड, नासिक रेड, एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, एग्रीफाउण्ड लाईटरेड, अर्काकल्याण, एन-53।

सफेद: उदयपूर 102, पूसा व्हाईट फ्लेट, राउण्ड।

पीली: अर्ली ग्रनो।

खाद एवं उर्वरक: प्याज के लिए अच्छी सड़ी हुई गोबर की खाद 400-500 क्विंटल प्रति हैक्टर खेत तैयार करते समय मिलायें, 100 किलो फास्फोरस व पोटाश प्रति हैक्टर दें। नत्रजन की आधी व फास्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा पौध रोपाई से पूर्व खेत की तैयारी के समय देवें। शेष नत्रजन खड़ी फसल में रोपाई के 60 दिन के भीतर 2-3 बार में अमोनियम सल्फेट के रूप में देना अच्छा होता है।

बुवाई: रबी की फसल के लिए बीज मध्य अक्टूबर से लेकर मध्य नवम्बर तक बोये। 15 अक्टूबर से 30 अक्टूबर का समय उपयुक्त है। तापमान अधिक रहने पर कुछ देरी से बुवाई करें क्योंकि अधिक तापमान से बीज अंकुरण प्रभावित होगा। एक हैक्टर हेतु 10 किलो बीज पर्याप्त है। नर्सरी हेतु जमीन को 0.1 प्रतिशत बाविस्टिन से उपचारित करें तथा मिट्टी को भुरभूरी बना लें नर्सरी की क्यारी 3×1 मीटर आकार की बनायें। बीजों को खरपतवार निकालने तथा दवा डालने के लिये बीज को 5 से 7 सेमी. की दूरी पर कतारों में बोयें। अंकुरण के बाद घास हटा देवें अंकुरण तक नियमित रूप से हल्की सिंचाई करें बीज बुवाई पूर्व थाइरम 2 ग्राम एक ग्राम बाविस्टिन प्रति किलो की दर से जरूर उपचारित करें।

खरपतवार नियंत्रण: बुवाई से पूर्व फ्लूक्लोरिलिन 2 किलो, 2 किलो बासालिन छिड़क कर भूमि में मिलाये, तत्पश्चात एक गुड़ाई 45 दिन की फसल पर करें। रोपाई के 40 दिन बाद 0.25 किलो/हैक्टर 2.4 डी (एस्टर) 800 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने पर बहुत अच्छे परिणाम मिले हैं। खरपतवार नियंत्रण के साथ-साथ उपज के परिणाम अच्छे मिल है।

पौध की रोपाई: पौध 7 से 8 सप्ताह में रोपाई योग्य हो जाती है। रबी फसल में 15 दिसम्बर से 13 जनवरी तक रोपाई का उपयोग समय है। रबी मौसम जल्दी रोपाई करने पर कल्ले (बौल्ट) निकल आते है। रोपाई के समय कतार से कतार व पौधे से पौध की दूरी क्रमश: 15ग 10 सेमी रखें।

सिंचाई: बीज बुवाई से अंकुण तक हल्की सिंचाई नियमित या दो दिन के अन्तराल पर करें। बीज बुवाई के बाद 3-4 दिन से हल्की सिचाई करें बाद में हर आठ से 10 दिन में आवश्यकतानुसार सिंचाई करे। दो सिंचाईयों के बीच में अन्तराल कम रखें व बुवाई से 10-15 दिन पहले सिंचाई बंद कर दें। फसल तैयार होने पर पौधे के शीर्ष पीले पड़कर गिरने लगते हैं। इस समय सिंचाई बन्द कर देनी चाहिये।

प्रमुंख कीट एवं व्याधियां

पर्ण जीवी: यह छोटे आकार के होते हैं। इनका आक्रमण तापमान वृद्धि के साथ बढ़ता है व फरवरी, मार्च में अधिक रहता है। पत्तियों पर सफेद चकते पड़ जाते है। नियंत्रण हेतु मैलाथियान 50 ई.सी. 1 मिली. प्रतिलीटर की दर से छिड़काव करें व 15 दिन के अन्तर से दोहरायें।

तुलसिता: पत्तियों की निचली सतह पर सफेद रूई जैसा फफूंद की वृद्धि हो जाती है। इसके नियंत्रण हेतु मेन्कोजेब या जाइनेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें साथ में साबुन का प्रयोग करें।

अंगमारी (बैंगनी धब्बा रोग) : इस रोग में पत्तियों की सतह पर सफेद धब्बे बन जाते है, जो बाद में बीच में बैंगनी हो जाते है। इसके नियंत्रण हेतु 2 ग्राम एम-45 को प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें साथ में तरल साबुन का प्रयोग करें।

गुलाबी जड़ सड़न: इस रोग में जड़े हल्की गुलाबी होकर गलने लगती है। नियंत्रण हेतु बाविस्टिन 2 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार कर बुवाई करें। पौध रोपण को बाविस्टिन एक ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल में डुबोकर रोपाई करें

जिंक की कमी: प्याज में जिंक की कमी से पत्तियों की टिप्स पीली भूरी पड़कर झुलस जाती है। नियंत्रण हेतु 25 किलो जिंक सल्फेट प्रति हैक्टर की दर से रोपाई से पहले खेत में मिलायें। या खड़ी फसल में 3 ग्राम प्रति लिटर पानी की दर से 15 दिन के अन्तर्गत दो छिड़काव करें।

खुदाई: कन्दों से लगाई फसल 90-110 दिन में तथा बीजों से लगाई फसल 140-150 दिन में तैयार होती है। पत्तियों के शीर्ष पीले पड़कर सूख जाते हैं उसके 15 दिन बाद खुदाई करें।

सुखाना: खुदी हुई गांठों को पत्तियों के साथ एक सप्ताह बाद पत्तों को गांठ से दो से ढाई सेन्टीमीटर ऊपर से काट देवें एवं एक सप्ताह तक सुखायें।

भण्डारण: पत्तियां काटकर सुखाने के बाद प्याज को हवादार सुखी एवं ठण्डी जगह में भण्डारित करें। जुड़वा व कटे हुये कन्द अलग कर दें।

पैदावार: औसत उपज 200 से 350 प्रति हैक्टर प्राप्त होती है।

बैंगन की फसल में कीट एवं रोग प्रबंधन

रामगोपाल सामोता एवं डॉ. बी.एल. जाट
कीट विज्ञान विभाग
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर

बैंगन (सोलेनम मेलोन्जेना) एक लोकप्रिय सब्जी है जिसका मूल भारत में है। इसकी खेती प्राचीन काल से होती आ रही है। मकोय (सोलोनेसी) कुल में बैंगन का प्रमुख स्थान है। यह सबसे आसानी से उपलब्ध और सस्ती सब्जियों में से एक है। इसमें बहुत से कीट एवं व्याधियों का प्रकोप होता है जो निम्नलिखित हैं-

कीट:

प्ररोह एवं फल छेदक: यह कीट बैंगन की फसल का प्रमुख शत्रु है, इस कीट की सूंड़ी चिकनी एवं गुलाबी रंग की होती है, इसकी पीठ पर बैंगनी रंग की धारियाँ होती है। सूण्ड़ी नई पुष्प कलियों तथा तने में छेद करके सुरंग बनाती हुई अन्दर घुस जाती है जिससे ऊपर का भाग मुरझा कर लटक जाता है और पौधे की बढ़वार रूक जाती है। जब फल लगते हैं तब ये कीट छिद्र करके उनके अन्दर का गूदा खाती है। जिसके कारण फल खाने योग्य नहीं रहते हैं व उनका बाजार मूल्य भी कम हो जाता है। इस कीट का प्रकोप ग्रीष्मकालीन फसल की तुलना में वर्षाकालीन फसल में अधिक होता है। इस कीट द्वारा 70 प्रतिशत तक की क्षति हो जाती है।

धब्बेदार पत्ती भृंग या हड्डा भृंग: यह कीट पौधशाला से ही हानि पहुंचाना शुरू कर देता है। इस कीट के वयस्क एवं ग्रब/शिशु दोनों ही पत्तियों के हरे व मुलायम भाग को खुरचकर उनमें छेद बनाकर खाते है। इसके कारण पत्तियों का केवल ढाँचा ही शेष रह जाता है तथा ग्रसित पौधे सूख कर मर जाते है।

तना छेदक: इस कीट की सूंड़ी तने में प्रवेश कर जाती है और तना नीचे की ओर झुक जाता है। प्रभावित पौधा मुरझा एवं झुलस जाता है। पौधों की बढ़वार एवं विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

फुदका (जैसिड): ये हरे रंग के छोटे-छोटे कीट होते हैं जो पत्तियों के निचले भागों में पाये जाते हैं और पत्तियों तथा कोमल टहनियों का रस चूसता है जिसके परिणामस्वरूप पत्तियां मुड़ जाती है। इसके प्रौढ़ एवं शिशु दोनों ही फसल को नष्ट करते है। अधिक प्रभाव से पत्तियां पीली अथवा भूरी हो जाता है।

चेंपा: इसके अर्भक (निम्फ) एवं वयस्क दोनों ही पत्तियों व ऊपरी टहनियों का रस चूसकर पौधों को हानि पहुंचाते है जिससे पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती है व नीचे की ओर झुक जाती है।

लाल मकड़ी माइट: यह एक छोटा-सा कीट होता है, इसके शिशु व वयस्क पत्तियों की कोशिकाओं का रस चूसते हैं जिससे पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती हैं।

नियंत्रण:

▶एक ही खेत में लगातार बैंगन की फसल को नहीं लेना चाहिए।
▶अपने क्षेत्र के लिए अनुमोदित जातियों के बीज ही उगायें।
▶ एपीलेक्ना/हड्डा भृंग के अण्डों और ग्रब्स को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए।
▶फल छेदक की निगरानी के लिए फेरोमोन ट्रेप (5 प्रति हैक्टे.) लगाएं।
-कीट ग्रस्त शाखाओं और फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
▶4-5 वर्ष का फसल चक्र अपनाएँ।
▶मकड़ी एवं परभक्षी कीटों के विकास एवं गुणन के लिए मुख्य फसल के बीच-बीच में और चारों तरफ बेबीकॉर्न लगाएं जो बर्ड पर्च का भी कार्य करती है।
▶रस चूसने वाले कीड़ों के लिए थायामिथोक्साम (2 ग्रा./10लि.) या डेल्टामेथ्रिन (1 मि.लि./ली.) का छिड़काव करें।
▶फल छेदक के नियंत्रण लिए ट्राइकोग्रामा ब्रासेलिअनसिस (1लाख/हैक्टे.) का उपयोग करें।
▶आवश्यकतानुसार फल छेदक के नियंत्रण के लिए साइपरमेथ्रिन (1.5 मि.लि./10 ली.) या इमामेक्टिन बेन्जोएट (2 ग्रा./10 ली.) या इकोनीम (10,000 पी.पी.एम.) (1 मि.लि./ली.) आदि का दो-तीन बार छिड़काव करें।
▶कार्बेरिल (सेविन 50 प्रतिशत घुलनशील पाउड़र 2 ग्राम प्रति लिटर पानी) या मेटासिस्टॉक्स (2 मिलि. प्रति लिटर पानी) के घोल का छिड़काव करें।
▶एक ही कीटनाशक का प्रयोग लगातार न करें।

रोग:-

आर्द्र विगलन: यह रोग पिथियम अफेनीडरमेटम नामक फफूंदी के कारण होता है। यह रोग पौधशाला में उगे पौधों पर लगता है, जिन पौधों में यह रोग लगता है वे भू-स्तर पर ही गलने लगते है। जब तक पौधों का तना इतना मजबूत न हो जाए तब तक रोग लगने का डर रहता है। भूमि से थोड़ा ऊपर या नीचे भी रोग लगने लगता है। पौधशाला में पौधों का मुरझाना एवं सूख जाना इस रोग का प्रमुख लक्षण है।

नियंत्रण:

▶ बीज बोने से पूर्व 10 से 15 दिन पौधशाला में कैप्टान या थायरम (2 ग्राम प्रति लिटर पानी) के घोल का छिड़काव करें।
▶ बीज बोने से पूर्व केप्टान या थायरम (2 ग्राम प्रति किलो बीज) से उपचारित करके बोएँ।
▶पौधशाला में बीज सदैव पंक्तियों में ही बोएं।
▶बीज बौने से पूर्व 500 से. तापमान के गर्म पानी से 30 मिनट तक उपचारित करके बोना चाहिए।
▶रोगी पौधों पर रोग के लक्षण दिखाई देते ही उखाड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
▶3-4 वर्ष का फसल चक्र अपनाएँ।

फोमोप्सिस झुलसा: यह रोग फोमोप्सिस वेक्सेन्स नामक फफूंदी के कारण होता है। इस रोग से पत्तियों पर छोटे-छोटे गोल भूरे धब्बे बन जाते हैं, अनियमित आकार के काले धब्बे पत्तियों के किनारों पर दिखाई पड़ते है। रोगी पौधों की पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती है और हवा चलने पर गिर जाती है। फलों पर धब्बे में धूल के कणों के समान भूरी रचना दिखाई पड़ती है जो बाद में बढ़ जाती है और वहां पर गूदा सड़ जाने के कारण गहरा दिखाई देने लगता है, ये धब्बे आकार में बड़े हो जाते हैं और फलों को सड़ाकर भूमि पर गिरा देते हैं। इस रोग का प्रकोप पौधशाला के पौधों पर भी होता है जिसके परिणामस्वरूप पौधे झुलस जाते हैं। इस रोग की फफूंदी भूमि में रहती है।

नियत्रण:

▶केवल स्वस्थ पौधों के बीज ही बोएँ।
▶बीज को बोने से पूर्व कैप्टान या थायरम से उपचारित करके बोएँ।
▶रोगरोधी किस्मों को उगाना चाहिए।
▶पौधशाला में 0.2 प्रतिशत कैप्टान का प्रति सप्ताह छिड़काव करें।
▶खेत को खरपतवारों से मुक्त रखें।
▶बीज बोने से पूर्व 500 से. तापमान वाले गर्म पानी में 30 मिनट तक उपचारित करें।
▶रोपाई के बाद 0.2 प्रतिशत जिनेब या मैनेब का छिड़काव करें।

छोटी पत्ती रोग: यह रोग माइकोप्लाज्मा के कारण होता है। रोगी पौधा बौना रह जाता है। पत्तियां आकार में छोटी रह जाती है। पत्तियों का डंठल भी काफी छोटा रह जाता है और वे तने से सटी प्रतीत होती है। तने का गाँठ वाला भाग भी छोटा हो जाता है। प्राय: रोगी पौधे पर फूल नहीं बनते और पौधे झाड़ीनुमा हो जाते हैं। यदि इन पौधों पर फल भी लग जाते है तो वे अत्यन्त कठोर होते है।

नियंत्रण:

▶रोगी पौधों को उखाड़कर जला देना चाहिए।
▶लीफहॉपर से फसल को बचाने हेतु 0.1 प्रतिशत फॉलीडाल का फल निर्माण के समय छिड़काव करना चाहिए।
▶पौधों को रोपाई से पूर्व टेट्रासाइक्लिन के 100 पी.पी.एम. के घोल में भिगोना चाहिए और रोपने के 4-5 सप्ताह तक प्रति सप्ताह छिड़काव करना चाहिए।
▶रोगरोधी किस्में उगाना चाहिए।
▶पौधशाला से पूरे रोगी पौधे निकालकर केवल स्वस्थ पौधे ही रोपे।
▶पेडी (रेटून) फसल न छोड़ें।

पत्तियों के धब्बे: यह रोग चार प्रकार की फफूंदियों द्वारा फैलता है-

1. **आल्टरनेरिया मेलांजनि**
2. **आल्टरनेरिया सोलेनाई**
3. **सरकोस्पोरा सोलेनाई मेलांजनि और**
4. **सरकोस्पोरा मेलांजनि।**

आल्टरनेरिया की दोनों प्रजातियों के कारण पत्तियों पर अनियमित आकार के भूरे धब्बे बन जाते है, जिसके कारण पत्तियाँ पीली पड़कर गिर जाती है। आल्टरनेरिया मेलांजनि के कारण फल भी प्रभावित होते है। रोगी फल पीले पड़ जाते है और पकने से पूर्व ही गिर जाते है। सरकोस्पोरा प्रजातियों के कारण पत्तियों में कोणीय से अनियमित आकार के धब्बे बन जाते हैं जो बाद में मटमैले भूरे रंग के हो जाते है। अत्यधिक रोग की स्थिति में पत्तियां गिर जाती है और पौधे पर फल कम लगते है।

नियंत्रण:

▶रोगी पत्तियों को तोड़कर जला देना चाहिए।
▶खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।
▶ब्लाइटॉक्स के 0.2प्रतिशत घोल (2 ग्राम दवा प्रति लिटर पानी) का 7-8 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
▶रोगरोधी किस्में उगाना चाहिए जैसे- मंजरी गोटा, ब्लैक राउण्ड, जूनागढ़ चयन-11, पी-8, पूसा पर्पिल क्लस्टर, एच-4 आदि।

सूत्रकृमि (नेमेटोड): यह रोग सूत्रकृमि मेलाइडोगाइन की अनेक प्रजातियों के कारण होता है। इस रोग के कारण पौधों की जड़ों में गांठों का निर्माण हो जाता है। रोगी पौधे बौने रह जाते हैं और कमजोर दिखाई पड़ते हैं। पत्तियां हरी-पीली या पीली होकर लटक या मुरझा जाती है। इस रोग से पौधा नष्ट तो नहीं होता लेकिन गांठों के सड़ने पर सूख जाता है। इस रोग के कारण 40-45 प्रतिशत तक की हानि हो जाती है।

नियंत्रण:

▶खेत में नीम की खली या लकड़ी का बुरादा 25 क्विंटल प्रति हैक्टेयर की दर से डालकर मिट्टी में भली भांति मिला देना चाहिए।
▶नेमागान 12 लिटर प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि पर पौधे रोपने के तीन सप्ताह पूर्व शोधन करें।
▶डी.वी.सी.पी. 20-40 लिटर प्रति हैक्टेयर मिट्टी में मिलानी चाहिए।

इस साल अक्टूबर से होगी मूंग एवं मूंगफली की खरीद

जयपुर (कासं)। प्रदेश में इस साल मूंग एवं मूंगफली की खरीद अक्टूबर से की जायेगी। किसानों के हितों के प्रति पूरी तरह संवेदनशीलता दिखाते हुए उन्हें दलहन एवं तिलहन फसलों का उचित मूल्य दिलवाने के लिए राज्य सरकार ने यह फैसला लिया है। सरकार ने किसानों से अधिकाधिक खरीद करने के भी निर्देश दिये हैं। मूंग की खरीद के लिए शुरूआत में प्रदेश में 76 केन्द्र खोले जाएंगे।

इसी प्रकार उड़द के लिए 28, मूंगफली के लिए 29 तथा सोयाबीन के लिए 25 केन्द्र खोले जायेंगे। किसानों के हितों को देखते हुए एवं जनप्रतिनिधियों की मांग पर और भी खरीद केन्द्र खोले जा सकेंगे। खरीद में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए किसानों को ई-मित्र केन्द्रों द्वारा ऑनलाइन आवेदन करने की सुविधा भी प्रदान की गई है। भामाशाह कार्ड से लिंक करते हुए भुगतान सीधे किसानों के खाते में होगा। यह खरीद पी.एस.एस. योजना के तहत होगी जिसका नोडल विभाग सहकारिता विभाग एवं एजेन्सी राजफैड होगी। राजफैड को कार्यशील पूंजी समय-समय पर उपलब्ध करवाई जायेगी। भण्डारण के लिए किसी प्रकार की समस्या उत्पन्न नहीं हो, इसके लिए राजस्थान राज्य भण्डार व्यवस्था निगम एवं केन्द्रीय भण्डार व्यवस्था निगम के द्वारा उचित व्यवस्था की जायेगी। बारदाने की समस्या नहीं हो इसके लिए नेफैड द्वारा बारदाना उपलब्ध कराया जायेगा। इस संबंध में राजफैड द्वारा नेफैड को पत्र लिखा जा चुका है। उल्लेखनीय है कि भारत सरकार ने इस वर्ष मूंग का समर्थन मूल्य 5 हजार 575 रूपये प्रति क्विंटल घोषित किया है, जिसमें 200 रुपये बोनस भी शामिल है। उड़द का समर्थन मूल्य 5 हजार 400 रुपये (200 रुपये बोनस सहित), मूंगफली का 4 हजार 450 रूपये (200 रुपये बोनस सहित) तथा सोयाबीन का समर्थन मूल्य 3 हजार 50 रुपये प्रति क्विंटल बोनस सहित घोषित किया है।

10,000 महिलाओं को मिलेगा लगभग 100 करोड़ का ऋण

जयपुर (कासं)। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री राजेन्द्र राठौड़ की उपस्थिति में राजीविका समर्थित महिला स्वयं सहायता समूहों को बैंक से ऋण उपलब्ध कराने के लिए इंदिरा गांधी पंचायती राज संस्थान में राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद एवं आई.डी.बी.आई. बैंक के बीच एक एम.ओ.यू. हस्ताक्षरित किया गया। इस समझौते से 10,000 महिला स्वयं सहायता समूहों को लगभग 100 करोड रुपये के ऋण प्रदान किया जाना है। राजीविका की तरफ से स्टेट मिशन डायरेक्टर रोहित कुमार एवं आई डी बी आई बैंक के क्षेत्रीय प्रमुख अनुनय कुमार झा ने एम.ओ.यू. पर हस्ताक्षर किये। यह समझौता 3 वर्ष के लिए हस्ताक्षरित किया गया हैं।

इससे पूर्व भी राजीविका ने बैंक ऑफ बड़ौदा, पंजाब नेशनल बैंक, आई.सी.आई.सी.आई. बैंक, बड़ौदा, राजस्थान क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक एवं राजस्थान मरूधरा ग्रामीण बैंक के साथ भी स्वयं सहायता समूहों को बैंक से ऋण उपलब्ध कराने के लिए एम.ओ.यू. किया जा चुका है जिससे प्रदेश में राजीविका के माध्यम से गठित स्वयं सहायता समूहों की हजारों महिलाओं को स्वरोजगार के लिए ऋण मिलेगा।

श्रीगंगानगर के खेतों में पकने लगा सफेद पेठा

श्रीगंगानगर के किसान हरियाणा से पौध लाकर करते हैं ट्रांसप्लांट, चार महीने में पैदावार तैयार

श्रीगंगानगर (विसं)। आगरा के पेठे के नाम से मशहूर मिठाई के लिए खेतों में पकने वाला सफेद पेठा अब श्रीगंगानगर क्षेत्र में लोकप्रिय होने लगा है। इस मिठाई का रॉ मैटेरियल सफेद पेठा किसानों के लिए जिज्ञासा तो पैदा करता है, लेकिन वे इसे खेतों में लगाने की विधि और अधिक उपज लेने के बारे में बहुत कम जानकारी रखते हैं। इसके बावजूद क्षेत्र के किसानों में पेठा उगाने का रुझान बढ़ा है। यही वजह है कि श्रीगंगानगर में पैदा पेठे की मिठाई पंजाब राजस्थान के अन्य हिस्सों में बहुतायत में जाती हैं। चक 8 एलएनपी के प्रगतिशील किसान जगदीश बिश्नोई के अनुसार अच्छी तरह से तैयार खेत में प्रति बीघा 30-40 हजार रुपए प्रति बीघा आमदनी की जा सकती है।

पशुओं से कोई खतरा नहीं : बिश्नोई आगरा के पेठे की खेती पिछले 10-12 साल से कर रहे हैं। इसे देखकर कुछ और किसानों का भी कुष्मांड कुल की इस बेल वाली उपज की तरफ रुझान बढ़ा है। कुछ किसान मानते हैं कि इसकी लताओं को कोई पशु, हरिण या नीलगाय नुकसान नहीं पहुंचाती, इसलिए यह अधिक मेहनत नहीं करवाता।

उनियारा मंडी में अब इलेक्ट्रॉनिक कांटे से होगी जिंसों की तुलाई

उनियारा (विसं)। कस्बे में स्थित कृषि उपज मंडी परिसर में किसानों के द्वारा लाई जाने वाली कृषि जिंसों को व्यापारी इलेक्ट्रॉनिक कांटे से तुलाई करेंगे।

कृषि उपज मंडी के मंडी के सचिव श्यामसुन्दर गुप्ता ने बताया कि कृषि उपज मंडी में सभी व्यापारी कृषि जिंसों को इलेक्ट्रॉनिक कांटे से तुलाई सोमवार से करने लगे है।

पल्लेदारों के लिए बनाया जाएगा लेबर शेड : उन्होंने बताया कि कोई भी व्यापारी यदि इलेक्ट्रॉनिक कांटे से तुलाई नहीं करेगा, उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। मंडी सचिव श्यामसुन्दर गुप्ता ने बताया कि मंडी परिसर में पल्लेदारों के लिए लेबर शेड बनाया जाएगा। इसके लिए कृषि विपणन बोर्ड के अधिशासी अधिकारी गोपाल लाल मीणा, सहायक अभियंता कालूराम ने निरीक्षण किया।

झाबरमल द्वारा तैयार की गई जैविक गाजर की खेती के गुर सीखेंगे देशभर के किसान

सीकर (विसं)। कृषि नवाचार में देशभर में पहचान बना चुके सीकर के किसानों का नाम अब वैज्ञानिक किसान पुस्तक में भी जुड़ गया है। पुस्तक के माध्यम से झीगर के किसान झाबरमल पचार द्वारा तैयार की गई जैविक गाजर की खेती के गुर देशभर के किसानों को सिखाए जाएंगे। यह पुस्तक उद्यान विभाग के सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक महेंद्र मधु ने लिखी है। पुस्तक को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उपमहानिदेशक एनएस राठौड़ ने किसानों के लिए जारी किया है। राठौड़ का कहना है कि किसानों के नवाचार अनुसंधान से जुड़ी हुई एग्रीकल्चर रिसर्च पुस्तकों को जल्द ही कृषि शिक्षा के पाठ्यक्रम में भी जोड़ा जाएगा। पुस्तक में 7 राज्यों के 17 किसानों को शामिल किया गया है। इसमें राजस्थान से झाबरमल पचार सहित दो किसानों का नाम है। पुस्तक में जैविक गाजर की खेती और बीज की खासियत बताई गई है। पुस्तक में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र उत्तर प्रदेश के 17 किसानों के रिसर्च का उल्लेख किया गया है।

जैविक गाजर का बीज तैयार करने वाला झीगर निवासी किसान झाबर मल पचार।

कृषि जागरुकता कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों तक पहुंचेगी पुस्तक : वैज्ञानिक किसान पुस्तक कृषि विभाग एवं अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित होने वाले कृषि जागरुकता कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों तक पहुंचाई जाएगी। पुस्तक में कृषि अनुसंधान को प्रमुखता से जगह दी गई है। इसमें बाजार वेल्यू से आधी कीमत वाले किसानों द्वारा तैयार किए गए कृषि उपकरण एवं मशीनरी तथा ज्यादा गुणवत्ता एवं उत्पादन देने वाली बीज किस्मों को शामिल किया गया है।

कृषि की पुस्तकों में अब तक जुड़े हैं सीकर के तीन किसानों के नाम: सीकरके झाबरमल सहित 3 किसानों के नाम एग्रीकल्चर रिसर्च पुस्तकों में जुड़ चुके हैं। इसमें दूसरा किसान झाबर मल पचार की पत्नी संतोष पचार तीसरा नाम अजीतगढ़ के किसान जगदीश पारीक का है। संतोष पचार का नाम भी लाल गाजर की जैविक किस्म के लिए तथा जगदीश पारीक का नाम गोभी की कई किस्मों का बीज तैयार करने के लिए एग्रीकल्चर पुस्तक में शामिल किया गया है।

स्वास्थ्य में ई-गवर्नेंस के क्षेत्र में राजस्थान देश में प्रथम

जयपुर (कासं)। स्वास्थ्य के क्षेत्र में ई-गवर्नेंस के लिये राजस्थान को सर्वश्रेष्ठ होने का अवार्ड मिलने के साथ ही कुल 9 स्काच अवार्ड प्रदान किये गये हैं। नयी दिल्ली में आयोजित 49वीं स्काच समिट में राजस्थान को यह अवाईस दिये गये हैं। इनमें पांच आर्डर आफ मेरिट, तीन प्लेटीनम एवं एक सिल्वर अवार्ड शामिल है। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री कालीचरण सराफ ने राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत विभिन्न परियोजनाओं में लिये गये ई-इनीशियेटिव के लिये एनएचएम राजस्थान टीम को बधाई दी है। इन ई-इनीशियेटिव से प्रदेश की स्वास्थ्य योजनाओं को प्रभावी ढंग से लागू करने में सहयोग मिल रहा है। स्काच अवार्ड हेतु राजस्थान की पांच स्वास्थ्य परियोजनाओं का नामिनेशन किया गया था और इन पांचों ही परियोजनाओं को स्काच अवार्ड प्राप्त हुआ है।

पॉल्ट्री फार्म, खरगोश शूकर पालन पर मिलेगी सब्सिडी

30 सितंबर से पहले करना होगा आवेदन

जयपुर (कासं)। किसानों की आय दुगुनी करने के लिए उन्हें खेती के साथ अन्य कामों के लिए भी प्रेरित किया जा रहा है। इसमें खासतौर से युवाओं के लिए राष्ट्रीय आजीविका मिशन में कई योजनाएं शुरू की गई है। इसमें उद्यमिता विकास और रोजगार सृजन (ईडीईजी) के पॉल्ट्री फार्म, सूअर पालन, खरगोश पालन और भैंसा के बच्चे के संरक्षण का काम करने वालों को सब्सिडी का प्रावधान किया गया है।

नाबार्ड के सहयोग दी जाने वाली इस सब्सिडी योजना के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 30 सितंबर 2017 है। इस योजना में इच्छुक किसानों को पशु चिकित्सालय के प्रभारी के जरिए आवेदन करना होगा। प्रभारी इस आवेदन पर अपनी टिप्पणी के साथ किसान की इच्छित बैंक या अन्य वित्तीय संस्था को भेज देगा।

बैंक अपनी औपचारिकताएं करने के बाद आवेदक को ऋण जारी कर देगा। योजना में सरकार की ओर से दी जाने वाली सब्सिडी सीधे बैंक खाते में जाएगी, जो आवेदक की ओर से ऋण की अंतिम किश्त चुकाने के बाद समायोजित की जाएगी।

वित्तीय संस्थाएं: पशुपालन निदेशालय में उपनिदेशक (बैंक प्रोजेक्ट) डॉ. रमेश गोदारा ने बताया कि इस योजना में आवेदक वाणिज्यिक बैंक, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक, राज्य सहकारी बैंक, राज्य सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक या नाबार्ड के पुनर्वित्त प्राप्त करने के लिए पात्र अन्य संस्थाओं से कर्ज के लिए आवेदन कर सकता है। कर्ज चुकाने की अवधि 5 से 9 वर्ष तक होगी।

सरकार सब्सिडी देगी, गाय-भैंस पालो, डेयरी या चिलिंग प्लांट लगाओ

कर्ज के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 30 सितंबर, सीधे बैंक में जाएगी अनुदान की राशि

जयपुर (कासं)। प्रदेश में दूध का उत्पादन बढ़ाने और इससे जुड़े लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए सरकार ने सब्सिडी देने की योजना शुरू की है। डेयरी उद्यमिता विकास योजना (डीईडीएस) नामक इस योजना में गाय, भैंस, बछड़ी या भैंसा पालन करने वालों के साथ ही डेयरी लगाने, चिलिंग प्लांट लगाने या प्रसंस्करण करने वालों को सब्सिडी देने का प्रावधान किया गया है। यह योजना नाबार्ड के सहयोग से शुरू की गई है। इसमें आवेदन 30 सितंबर 2017 से पहले करना होगा। आवेदन करने वाले पहले आओ-पहले पाओ की नीति के तहत सब्सिडी पाने के हकदार होंगे। योजना में नाबार्ड ने 23 करोड़ 69 लाख 25 हजार रुपए का अनुदान देने का प्रावधान किया है। पशुपालन निदेशालय के उपनिदेशक (बैंक प्रोजेक्ट) डॉ. रमेश गोदारा ने बताया कि योजना में व्यक्तिगत आवेदन के अलावा स्वयं सहायता समूह या सहकारी समिति के तहत भी आवेदन किया जा सकता है।

आवेदन कैसे करें

इच्छुक व्यक्ति को इस योजना के तहत पहले निकटतम पशु चिकित्सालय में आवेदन करना होगा। चिकित्सालय प्रभारी आवेदन को आवेदनकर्ता की पसंदीदा बैंक में फॉरवर्ड करेंगे। बैंक जरूरी दस्तावेज लेकर संतुष्ट होने पर कर्ज जारी करेगा। अलग-अलग बैंक की ब्याज दरें भिन्न हो सकती हैं।

सब्सिडीसीधे जाएगी खाते में

बैंक से कर्ज मंजूर होने के बाद पहली किस्त आवेदक के खाते में जाते ही, बैंक नाबार्ड को सब्सिडी के लिए आवेदन करेगा। नाबार्ड से बैंक के रिजर्व खाते में राशि जाएगी। उतनी राशि पर ब्याज लगना बंद हो जाएगा। बाकी राशि की आखिरी किस्त चुकने के बाद सब्सिडी की राशि आवेदक के खाते में जमा कर खाता बंद कर दिया जाएगा। कर्ज प्रकृति के अनुसार 3 से 7 साल के बीच चुकाना होगा।

पी.एस.एस. स्कीम के तहत होगी मूंग और मूंगफली की खरीद

नई दिल्ली (विसं)। राजस्थान सरकार किसानों को उनकी दलहनी और तिलहनी फसलों का उचित मूल्य दिलवाने के लिए केन्द्र सरकार की नोडल एजेंसी नेफेड के माध्यम से पी.एस.एस. योजना के तहत शीघ्र ही मूंग और मूंगफली की खरीददारी करवाएगी। इसके लिए सहकारिता विभाग की राजफैड प्रदेश की नोडल एजेन्सी होगी। केंद्रीय खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री सी आर चौधरी के साथ नई दिल्ली के कृषि भवन में राजस्थान के सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक की बैठक में हुआ। इसके लिए पी.एस.एस. स्कीम के तरह राजफैड को एक रिवॉल्विंग फण्ड बनाना होगा और राज्य सरकार को कृषि मंडी टैक्स को हटाने की सहमति देनी होगी। बैठक में केंद्रीय खाद्य और सार्वजनिक वितरण तथा कृषि मंत्रालय के साथ ही नेफेड और राजफैड के वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। केंद्रीय खाद्य और सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री सी आर चौधरी ने बताया कि भारत सरकार ने इस वर्ष मूंगफली का समर्थन मूल्य 4450 रु प्रति क्विंटल घोषित किया है। जिसमें 200 रुपये बोनस शामिल है। इसी प्रकार मूंग का समर्थन मूल्य 5575 रुपये प्रति क्विंटल तय हुआ है, जो कि गत वर्ष की तुलना में अधिक है। उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार ने पिछले वर्ष भी राजस्थान से सबसे अधिक 1.90 लाख मैट्रिक टन मूंग की खरीद करवा किसानों को उनकी फसल का उचित मूल्य दिलवाने में मदद की थी। अजय सिंह किलक ने बताया कि मुख्यमंत्री प्रदेश के किसानों को उनकी उपज की वाजिब कीमत दिलवाने के लिए बहुत चिंतित हैं। उन्होंने बताया कि मंडी टैक्स आदि पर मुख्यमंत्री से उचित निर्णय करवा राजस्थान सरकार आगामी एक अक्टूबर से मूंग और मूंगफली की खरीद शुरू करवाना चाहती है। इसके लिए पिछली बार की तरह ही इस बार भी 70-72 खरीद केन्द्र बनाये जायेंगे।

उन्होंने बताया कि इस बार किसानों की सुविधा के लिए सहकारिता विभाग ने एक सोफ्टवेयर भी बनाया है,जिस पर किसान अपनी फसल की बिक्री के लिए ई मित्र केन्द्रों के द्वारा ऑनलाइन आवेदन कर सकेंगे। तदनुरूप किसानों की सुविधा के अनुसार उन्हें एस एमएस द्वारा खरीद की तिथि की सूचना भिजवाई जाएगी। काश्तकारों को अपने साथ गिरदावरी की रिपोर्ट और भामाशाह कार्ड की प्रति लानी होगी। किसानों की फसल का तय मूल्य उनके बैंक खाते में सीधा ट्रांसफर होगा। खरीद केन्द्रों पर फसल की गुणवत्ता की जाँच के लिए नैफेड के प्रतिनिधि मौजूद रहेंगे। खरीद का काम तीन माह तक चलेगा।

किसानों के हित में बड़ा फैसला

सहकार किसान कल्याण योजना में 0.50 प्रश. ब्याज दर घटाई

जयपुर (कासं)। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि राज्य सरकार ने किसानों के हित में बड़ा फैसला लेते हुए केन्द्रीय सहकारी बैंकों से सहकार किसान कल्याण योजना के तहत ब्याज दर में 0.50 प्रतिशत की कमी की है। उन्होंने बताया कि योजना के तहत कृषि ऋण का समय पर चुकारा करने पर काश्तकारों को 2 प्रतिशत ब्याज अनुदान दिया जाएगा। अब समय पर ऋण का चुकारा करने वाले काश्तकारों को 9 प्रतिशत ब्याज दर से ऋण मिल पाएगा। यह योजना सभी सहकार किसान कल्याण योजना के तहत 31 मार्च, 2018 तक वितरित ऋणों पर लागू रहेगी। उन्होंने बताया कि इस योजना का उद्देश्य किसानों की सभी कृषि संबंधी ऋण आवश्यकताओं को सहकारी बैंकों के माध्यम से पूरा करना है।

इस योजना के माध्यम से किसानों की आय को दुगना करने के लिए कृषि में आधुनिक साधनों के उपयोग को बढ़ावा देने, कृषि के अतिरिक्त आय के साधन विकसित करने के साथ-साथ पशुपालन एवं बागवानी को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। किलक ने बताया कि योजना की शर्तों को आसान बनाया गया है तथा किफायती ब्याज दर पर ऋण स्वीकृति को सरलीकृत किया गया है। सहकारिता मंत्री ने बताया कि किसानों को इस योजना के तहत अधिकतम 10 लाख रुपये तक के ऋण की सुविधा मिलेगी।

उन्होंने बताया कि इस योजना में किसानों को कृषि एवं अन्य संबंधित प्रयोजनों के लिए दीर्घ कालीन अवधि के लिए टर्म लोन के साथ साख सीमा भी स्वीकृत की जा सकेगी। सहकारिता मंत्री ने बताया कि इस योजना में अब सौर ऊर्जा पम्प, ग्रीन हाउस, पॉली हाउस, व्हाईट हाउस, ड्रिप सिंचाई संयंत्रों को क्रय करने जैसी गतिविधियों इस योजना में शामिल किया गया है। उन्होंने बताया कि ऐसी कोई अन्य गतिविधि या प्रयोजन जो कृषि विकास में सहायक हो तथा जिससे किसान को अतिरिक्त रोजगार मिल सके या आमदनी हो ऐसे सभी प्रयोजनों के लिए, इस योजना के तहत ऋण दिए जाने की व्यवस्था की गई है।

इन कार्यों के लिए मिलेगा ऋण

सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि किसान कृषि यंत्रीकरण जैसे ट्रेक्टर, कल्टीवेटर, कृषि आदान व उत्पाद परिवहन वाहन, सीड ड्रिल, थ्रेसर, कुट्टी मशीन, अन्य कृषि यंत्रों की खरीद एवं मरम्मत तथा सिंचाई साधन जैसे पाईप लाईन, फव्वारा, लघु सिंचाई, निर्माण कार्य एवं मरम्मत नाली सुधार एवं मरम्मत, पानी की खेली व पंप रिपेयर आदि के लिए दीर्घ कालीन अवधि के लिए ऋण ले सकते हैं। किसानों की अतिरिक्त आय के सृजन के लिए बागवानी विकास के कार्य जैसे बागवानी, बीज उत्पादन, मेंहदी उत्पादन, फलदार पौध, नर्सरी विकास, कृषि भूमि की फेंसिंग, मुण्डेर का निर्माण/मरम्मत, बिजली बिल भुगतान तथा डेयरी विकास के कार्य जैसे दुधारू पशु खरीद, चिकित्सा, पशु बीमा, केटल शेड निर्माण, दुग्ध प्रसंस्करण यंत्र, चारा उत्पादन, मुर्गी पालन, मछली पालन, ऊंटगाडी,बैलगाडी खरीद एवं मरम्मत के लिए इस योजना के तहत ऋण दिया जाएगा।

31 मार्च, 2018 तक वितरित ऋणों पर मिलेगा लाभ

सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने बजट घोषणा में इसको शामिल किया था। घोषणा पर अमल करते हुए इसे 1 अप्रेल, 2017 से लागू किया गया है। 1 अप्रेल से 31 मार्च, 2018 तक की अवधि में ऋण लेने वाले सभी किसानों को योजना का लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि दीर्घ कालीन कृषि ऋण 11 प्रतिशत की ब्याज दर पर देय होता है तथा समय पर ऋण चुकता करने वाले कृषकों को 2 प्रतिशत ब्याज अनुदान देकर उन्हें राहत प्रदान की गई है।

सहकारी सदस्यता के लिए चलेगा अभियान

जयपुर (कासं)। राज्य में सहकारी योजनाओं का अधिक से अधिक किसानों एवं लोगों को लाभ मिल सके, इसके लिए 22 सितम्बर से प्रदेश स्तर पर अभियान चलाकर 3 लाख से अधिक नए किसानों एवं अन्य लोगों को सहकारी समितियों से जोड़ा जाएगा। यह अभियान 31 अक्टूबर, 2017 तक चलेगा। यह जानकारी सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने दी।

सहकारिता मंत्री ने बताया कि हमारा उद्देश्य राज्य में सहकारिता का दायरा बढ़ा करगुणवत्तापूर्ण सहकारी सेवाओं के माध्यम से किसानों की वर्ष 2022 तक आय दुगुनी करने के लक्ष्य को प्राप्त करना है। इस दिशा में नए किसानों को सहकारिता से जोड़ना एक कदम है।

भूमि विकास बैंकों से ऋण लेने वाले किसानों को मिलेगा 5 प्रतिशत अनुदान, ब्याज दर रहेगी 7.10 प्रतिशत

जयपुर। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि राज्य सरकार ने किसानों के हित में बड़ा फैसला लेते हुए दीर्घ कालीन कृषि ऋण लेने वाले काश्तकारों के लिए 5 प्रतिशत ब्याज अनुदान की योजना लागू की है। अब समय पर ऋण चुकाने वाले काश्तकारों को 7.10 प्रतिशत ब्याज दर से ऋण मिल पाएगा। यह योजना 31 मार्च, 2018 तक लागू रहेगी।

यह योजना सहकारी भूमि विकास बैंकों से दीर्घ कालीन अवधि के लिए लेने वाले ऋणों पर लागू होगी। किसानों को कृषि कार्यों के लिए ऋण की सर्वाधिक आवश्यकता होती है, लेकिन ब्याज दर अधिक होने के कारण किसान को ब्याज चुकाने में परेशानी का सामना करना पड़ता था और कृषि कार्यों में रुकावट भी पैदा होती थी। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने बजट घोषणा में इसको शामिल किया था। घोषणा पर अमल करते हुए इसे 1 अप्रेल, 2017 से लागू किया गया है। 1 अप्रेल से 31 मार्च, 2018 तक की अवधि में ऋण लेने वाले सभी किसानों को योजना का लाभ मिलेगा। दीर्घ कालीन कृषि ऋण 12.10 प्रतिशत की ब्याज दर पर देय होता है तथा समय पर ऋण चुकता करने वाले कृषकों को 5 प्रतिशत ब्याज अनुदान देकर उन्हें राहत प्रदान की गई है। किसान लघु सिंचाई के कार्य जैसे नवकूप/नलकूप, कूप गहरा करने, पम्पसैट, फव्वारा/ड्रिप सिंचाई, विद्युतीकरण, नाली निर्माण, डिग्गी/हौज निर्माण तथा कृषि यंत्रीकरण के कार्य जैसे ट्रेक्टर, कृषि यंत्रादि, थ्रेसर, कम्बाईन हार्वेस्टर आदि को क्रय करने के लिए दीर्घ कालीन अवधि के लिए ऋण ले सकते हैं।

'प्रत्येक जिले में आयोजित किए जाएंगे पशुपालक जागरूकता कार्यक्रम'

जयपुर (कासं)। राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड के अध्यक्ष जगमोहन सिंह बघेल ने कहा कि राजस्थान के प्रत्येक जिले में पशुपालक जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन कार्यक्रमों में पशुपालकों को कृत्रिम गर्भाधान, भामाशाह पशु बीमा योजना की जानकारी देने के साथ उनकी समस्याओं का समाधान हाथों-हाथ किया जाएगा। बघेल ने राजस्थान पशुधन विकास बोर्ड द्वारा जामडोली स्थित राजस्थान पशुधन प्रशिक्षण संस्थान पशुपालन जनजागृति कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में पशुपालकों से आह्वान किया कि वे पशुपालन विभाग द्वारा चलाए जा रहे एफएमडी टीकाकरण अभियान का लाभ उठाएं और अपने पशुओं का अनिवार्य रूप से टीकाकरण करवाएं। बघेल ने कहा कि किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य तभी हासिल हो सकता है, जबकि पशुपालक दुग्ध उत्पादन को बढ़ाएं। इसके लिए जरूरी है कि पशुओं का नस्ल सुधार हो। यह नस्ल सुधार तभी हो सकता है जबकि पशुओं का कृत्रिम गर्भाधान करवाया जाए। उन्होंने देशी गौवंश के संरक्षण एवं संवर्द्धन की भी बात कही। राजस्थान सरकार द्वारा भामाशाह पशु बीमा योजना संचालित की जा रही है, जिसकी तहत पशुपालक बहुत कम प्रीमियम दर अपने दुधारू पशुओं का बीमा करवा सकते हैं।

Hindchem Corproation

SUPPER POTASSIUM HUMATE SHINY FLAKES

ZINK EDTA

SEAWEED EXTRACT FLACKES

N.P.K. WATER SOLUBLE FERTILIZER

AMINO ACID

AMINO+HUMIC SHINY BALLS
FERROUS SULPHATE19%
MAGNESIUM SULPHATE 9.6%
FERROUS EDTA12%
E.D.T.A. ACID
CAMPHOR
SODIUM BICARBONATE
EDTA DISODIUM
CITRIC ACID MONOHYDRATE
MANGANESE SULPHATE 30.5%
SULPHUR 90% -80WDG
BORON 20%
BRONOPOL 25%
PHOSPHORIC ACID

We Welcome Your Valuable Inquiry
Tel. 022-66998360/61
Fax-022-66450908
Email id: mamta@hindchem.com
Mo. 9004744077

ग्वारपाठा : प्रकृति का बहुपयोगी अनमोल उपहार

ममता बाज्या, ममता देवी चौधरी एवं तेजपाल बाज्या, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर (जयपुर)-303329

ग्वारपाठा सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्राकृतिक रूप से मिलता है। यह यूरोप, उत्तरी अमेरिका, स्पेन, थाइलैण्ड चीन, वेस्टइण्डीज, भारत आदि देशों में भी पाया जाता है। इसके पौधे बहुवर्षीय तथा 2-3 फुट ऊँचे होते हैं तथा इसके मूल के ऊपर काण्ड से पत्ते निकलते हैं। ये काण्ड को चारों ओर से घेरे रहते हैं तथा निकास स्थान से इनका वर्ण श्वेत होता है। धीरे-धीरे यह आगे को जाकर हरा हो जाता है। इसके पत्ते मांसल, भालाकर, 1.5-2.0 फीट तक लम्बे व 3-5 इंच चौडे एवं सूक्ष्म कांटों से युक्त होते हैं। पत्तों के अन्दर घृत के समान चमकदार गूदा होता है तथा इसके बीच-बीच में कुछ रेशे भी दिखाई देते हैं। पुराने क्षुप के मध्य लम्बा पुष्पध्वज निकलता है, जिस पर रक्ताभ पीत वर्ण के फूल आते हैं। पत्तों के काटने पर एक पीले रंग का रस निकलता है, जो ठण्डा होने पर जम जाता है। इसे 'कुमारी सार' कहते है।

मुख्य औषधीय कारक: ग्वारपाठे के पत्तों में 94 प्रतिशत पानी एवं 6 प्रतिशत अमीनों अम्ल (20 प्रकार के) एवं कार्बोहाइड्रेट्स होते हैं। घृत कुमारी के पत्तों में एलोइन नामक ग्लूकोसाइड समूह होता है। इसके अतिरिक्त बारबेलाइन, बी बारबेकोइन, आइसो बारबेलोइन तत्व उपस्थित होते हैं। साथ ही इसमें एलो-इमोलीन, रॉल, गैलिक अम्ल एवं सुगन्धित तैल होता है।

प्रमुख प्रजातियाँ: ग्वारपाठा मुख्यतया अफ्रीका, अरब देशों तथा भारतवर्ष में पाया जाता है। इसके प्राप्ति स्थल एवं देश, भेद के अनुसार इसकी कई प्रजातियाँ पहचानी गई है।

इनमें मुख्य हैं:-

एलो बारबडेनसिस: यह ग्वारपाठे की मुख्य प्रजाति है जो सर्वत्र विशेषकर मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि प्रान्तों में पाई जाती है। ग्वारपाठे की यह प्रजाति जैल निकालने के लिए सम्पूर्ण भारतवर्ष में उगाई जाती है।

एलो इंडिका: यह ग्वारपाठे की छोटी प्रजाति हैं, जो भारत में चैन्नई से रामेश्वरम तक पाई जाती है, इसे छोटा ग्वारपाठा भी कहा जाता है। इसके पत्ते 6-7 इंच से एक फुट तक लम्बे होते हैं व किनारे सामान्यत: दन्तुर होते हैं। यह प्रजाति विशेषत: दाह, विबन्ध और ज्वर आदि रोगों में उपयोगी होते हैं।

जलवायु: यह सभी प्रकार की जलवायु में उगाया जा सकता है। मुख्यत: उष्ण प्रदेशों में इसकी अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

भूमि: ग्वारपाठा की खेती मुख्य रूप से बलुई से दोमट भूमि में असिंचित एवं सिंचित दोनों प्रकार से आसानी से की जा सकती है। परन्तु इसकी खेती सदैव असिंचित भूमि पर करनी चाहिए तथा जिस जमीन पर इसकी खेती करनी है वहां पानी भरा नहीं रहना चाहिए। इसकी जड़ भूमि में अधिक गहराई तक नहीं जाती है। यह सभी प्रकार की भूमियों में लगाया जा सकता है।

खेत की तैयारी: ग्वारपाठे की खेती के लिए चयनित खेत की 2-3 बार हल द्वारा जुताई करके अन्तिम जुताई के बाद पाटा लगा देना चाहिए।

खाद एवं उर्वरक: इसकी खेती के लिए मुख्यतया खाद एवं उर्वरकों की आवश्यकता नहीं होती है। यह बहुवर्षीय फसल होने की वजह से पौध रोपाई के पूर्व में 10-15 टन सड़ी गोबर की खाद खेत में डालना लाभप्रद माना जाता है।

रोपण का समय: ग्वार पाठे की फसल कंदों के द्वारा उगाई जाती है। इसका पौध रोपण वर्षाकाल में जुलाई-अगस्त माह में किया जाता है। ग्वारपाठे की बुवाई फरवरी-मार्च माह में भी की जा सकती है, परन्तु इस रोपाई के बाद पौधों में फुटान के लिए नमी की आवश्यकता होती है। अत: फरवरी-मार्च में की गई रोपाई के बाद ही हल्की सिंचाई करनी चाहिए।

पौध एवं रोपण विधि: पौधों को क्रमबद्ध तरीके से लाइनों लगाना चाहिए। लाइन से लाइन तथा पौधे से पौधे की दूरी क्रमश: 2×2, 2.5×2.5 एवं 3×3 फीट तक रखनी चाहिए। इस प्रकार एक हैक्टेयर खेत में लगभग क्रमश: 28000, 18000 एवं 12000 तक पौधों की आवश्यकता होती है परन्तु यदि सिंचाई की पर्याप्त व्यवस्था हो तो पौधों को 2.5×2.5 फीट पर लगाने पर पत्तियों की मोटाई व लम्बाई अधिक होगी जिससे अधिक पैदावार होती है।

सिंचाई: साधारणतया ग्वारपाठे की खेती के लिए सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है परन्तु गर्मियों में कभी-कभी हल्के पानी का छिड़काव करना लाभदायक होता है। पत्तियों की कटाई से एक माह पूर्व फसल में सिंचाई करने से अधिक जैल प्राप्त होती है।

निराई-गुड़ाई: प्रत्येक माह के अन्तराल पर खेत की निराई-गुड़ाई करके अवांछित पौधों को निकालते रहने से इसके उत्पादन में वृद्धि होती है।

कंदों को हटाना: फसल के जमने के पश्चात् इसकी जड़ों से कंद निकलना शुरू हो जाते हैं जो खेत में लगातार पौधों की संख्या बढ़ाना शुरू कर देते है। खेत में तादाद से ज्यादा पौधे होने पर इसके उत्पादन पर प्रतिकूल असर पड़ता है। अत: प्रत्येक छ: महीनों के पश्चात् पौधों की जड़ों में निकले कंदों को हटाते रहना चाहिए, जिससे पौधों की वांछित संख्या खेत में बनी रहे।

फसल की कटाई: पौधे लगाने के 16 महीने के बाद, हर पौधे की 3-4 पत्तियों को छोड़कर शेष सभी पत्तियों को तेज धारदार हॉसियें से काट लेना चाहिए।

भण्डारण: ग्वारपाठे की ताजी कटी हुई पत्तियों को ज्यादा दिनों तक भण्डारित नहीं किया जा सकता अत: कटाई के पश्चात् 2-3 दिन के भीतर इनमें से जैल को निकाल लेना चाहिए एवं कटाई के बाद पत्तों को छाया में रखना चाहिए। जैल निकालने के बाद इसमें उपयुक्त प्रजर्वेटिव्ज डालकर एक से दो साल तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

प्रमुख रोग व कीट: मुख्यतया इस फसल को किसी प्रकार के कीट व रोग नुकसान नहीं पहुंचाते हैं परन्तु अधिक नमी की वजह से एलटरनेरिया ब्लाइट का प्रकोप पौधों की पत्तियों पर हो जाता है। अत: इस रोग की रोकथाम के लिए 2-3 ग्राम डाईथेन एक-45 का प्रतिलिटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करना चाहिए।

उपज: इस प्रकार की कृषि क्रिया से वर्ष भर में प्रति हेक्टेयर ग्वारपाठे के लगभग 250 क्विंटल ताजा पत्ते प्राप्त होते हैं। इसके अतिरिक्त प्रतिवर्ष प्रति हैक्टेयर खेतों से लगभग 25000 केन्द्र प्राप्त होते हैं, जिनको रोपाई के काम लाया जा सकता है।

बीज उत्पादन: ग्वारपाठे की पौध रोपण सामग्री तैयार करने के लिए अलग से कोई व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं होती है। परन्तु जिस खेत में फसल ली गई है, वहीं इसकी जड़ों से स्वत: ही नये पौधे निकलते रहते हैं जिनको प्रत्येक छ: महीने के अन्तराल पर निकालते रहना चाहिए एवं इनको दूसरी फसल बुवाई में प्रयुक्त कर सकते हैं। इस प्रकार एक हेक्टेयर फसल से प्रतिवर्ष लगभग 25000 पौधे नये तैयार हो जाते है।

उपयोग: अनेकों औषधियों में प्रयुक्त होने के कारण वर्तमान में ग्वारपाठा की मांग काफी बढ़ गई है। इसकी जैल व सूखे पाउडर की मांग विश्वस्तर पर बनी रहती है। वर्तमान में इससे अनेक उत्पादन सौन्दर्य प्रसाधन के रूप में बाजार में उपलब्ध है जैसे- ऐलोवेरा बाथ सोप, ऐलोवेरा शैम्पू, ऐलोवेरा हेयर ऑयल, ऐलोवेरा टूथ पेस्ट, ऐलोवेरा शेविंग क्रीम, ऐलोवेरा केश वास एवं ऐलोवेरा मोइश्चराइजर आदि।

फसल का आय विवरण: प्रथम वर्ष का शुद्ध लाभ 75000-35500 व 39500 रूपये है। इसके उपरान्त ग्वारपाठे की ताजा पत्तियां लगातार 5 वर्षों तक प्रत्येक 3-4 महीने के अन्तराल पर काटी जा सकती है। इस खेती का प्रमुख लाभ यह है कि फसल के एक बार जमने के पश्चात् हर वर्ष खेत की तैयारी, रोपण सामग्री व बुवाई की आवश्यकता नहीं होती है तथा आगे के वर्षों में कंदों को हटाना व पत्तियों की कटाई की लागत मात्र 10000 रूपये प्रति हैक्टेयर आती है। अत: प्रति वर्ष प्रति हैक्टेयर लगभग 65000 रूपये का लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

प्रोसेसिंग यूनिट: ग्वारपाठे से जैल निकालने के लिए प्रोसेसिंग यूनिट की आवश्यकता होती है जो फिल्टरर्स, कूलिंग, हिटींग व मिक्सिंग यूनिटस की बनी होती है।

लघु प्रोसेसिंग यूनिट लगभग तीन लाख रूपये में मिल जाती है जो प्रतिदिन 50 लीटर जैल निकाल सकती है। वृहद् प्रोसेसिंग यूनिट 8-10 लाख रूपये में आती है जो प्रतिदिन 400-500 लीटर जैल निकाल देती है। इसके अतिरिक्त सूखा पाउडर बनाने की मशीन भी आती है। लघु स्तर की प्रोसेसिंग यूनिट लगाने हेतु 20-30 हैक्टेयर फसल क्षेत्र की आवश्यकता होती है। वृहद स्तर की प्रोसेसिंग यूनिट लगाने के लिए 100 हैक्टेयर फसल की आवश्यकता होती है।

औषधीय महत्व:

-यह ऐन्टी इन-फलोमेंट्रो और एन्टी एलर्जिक है तथा बिना किसी साइड इफेक्ट्स के सूजन व दर्द को मिटाता है व एलर्जी से उत्पन्न रोगों को दूर करता है।

-यह पेट के हाजमे लिये लाभदायक है। ऐलोवेरा के नियमित रूप से प्रयोग करने पर पेट में उत्पन्न विभिन्न प्रकार के रोगों को दूर किया जा सकता है, जैसा कि गेस का बनना, पेट का दर्द आदि।

-यह शरीर में सूक्ष्म कीटाणु, बेक्टीरिया, वायरस एवं कवक जनित रोगों से लड़ने में एंटीबायोटिक के रूप में काम करता है।

-यह शरीर में उत्पन्न जख्मों को भरने में अत्यन्त लाभकारी है। मधुमेह के रोगियों के जख्म भरने में भी कारगर सिद्ध हुआ है।

-यह हृदय के कार्य करने की क्षमता को बढ़ाता है एवं उसे मजबूती प्रदान करता है तथा शरीर में ताकत एवं स्फूर्ती लाता है।

-इसकी जैल प्राकृतिक रूप से त्वचा को नमी पहुंचाती है एवं उसे साफ करने के उपयोग में लाई जाती है।

-यह एक्जीमा, कीटाणु के काटने के स्थान पर, किसी भी प्रकार के कट लगने पर, जलने के स्थान पर, चुभने वाली तापमान की गर्मी, मुहांसे, घमोरिया, छालरोग, चोट लगने से गुमटा बना जाना, इत्यादि में लाभदायक है।

-जैल बालों में डेन्ड्रफ को दूर करने तथा बालों को झड़ने से रोकती है।

अनार के रोग एवं कीट नियंत्रण

राजेश कुमार मीना, वर्तमान में कार्यरत तकनीकी सहायक राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान, दुर्गापुरा जयपुर, (एस.के.एन.ए.यू. जोबनेर) **राजेन्द्र कुमार मीना** व **सुरेन्द्र कुमार मीना,** महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, उदयपुर।

अनार के पौधों व फलों का रोगों व कीड़ों से काफी नुकसान होता है अत: इनकी रोकथाम करना बहुत आवश्यक है। प्रमुख रोगों के लक्षण, कीड़ों की पहचान एवं उनके नियन्त्रण के उपाय निम्नलिखित है:-

पत्ती व फल धब्बा रोग: इस रोग का प्रकोप अधिकतर 'मृग बहार' की फसल में होता है। वर्षा ऋतु में अधिक नमी के कारण पत्तियों और फलों के ऊपर फफूंद के भूरे धब्बे दिखाई देते हैं। जिससे फलों के बाजार मूल्य में गिरावट आ जाती है। इसकी रोकथाम के लिए मैन्कोजेब (0.2प्रश.) या जाइनेब (0.2प्रश.) फूंदनाशाषी दवा का 15-20 दिन के अन्तराल पर तीन-चार बार छिडकाव धब्बे दिखाई पड़ते ही करने चाहिए। फल व पत्तियों पर बैक्टीरिया के कारण भी धब्बे पड़ जाते हैं जिससे फल की गुणवत्ता खराब होती है।

फल सड़न रोग: इस रोग से फल सड़ने लगते हैं अत: रोग के लक्षण आने पर बेविस्टीन कवकनाशी के 0.1 प्रतिशत (ग्राम दवा प्रति लीटर पानी में) घोल के दो तीन छिड़काव 15 दिन के अन्तर पर करने चाहिए।

दीमक या उदई: शुष्क क्षेत्रों में अनार के पौधों की जड़ों एवं तनों में दीमक का अत्यधिक प्रकोप होता है। जिससे पौधे सूख जाते हैं। इस क्षेत्र में अनार की पौध स्थापना में दीमक का प्रकोप एक गंभीर समस्या है। इससे बचाव के लिए पौध रोपण के समय ही प्रत्ये गड्ढे के भरावन मिश्रण में 50 ग्राम मिथाइल पैराथियान चूर्ण (5प्रश.) मिलाना चाहिए। पौधों की प्रत्येक सिंचाई करते समय 'क्लोरोपायरिफास' (डरमेट) कीटनाशक दवा को 5-10 बूंद पानी के साथ देते रहना चाहिए। इस प्रकार दीमक से बचाव का प्रभावी तरीका अपना कर पौध स्थापना में अच्छी सफलता मिल सकती है।

अनार की तितली: यह अनार के फलों का सबसे हानिकारक कीट है। प्रौढ़ तितली द्वारा दिये गये अंडों से निकली सूण्डियां फलों को छेदकर अन्दर प्रवेश करती हैं तथा फल के गूदे को खाती रहती है। इसके नियंत्रण के लिए वर्षा ऋतु में फल विकास के समय 0.2 प्रतिशत डेल्टामेथ्रीन या 0.03 प्रतिशत फॉरफोमिडान कीटनाशक दवा के घोल का 15-20 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव करना लाभदायक पाया जाता है।

तनाबोधक: वयस्क कीट कोपलें, पत्तियों और टहनियां खाते हैं जबकि सुराख बनाकर अन्त:ऊतक को नष्ट कर देते हैं। जिससे तना कमजोर हो जाता है पौधे सूखने लगते हैं। तनाबोधक कीट से बचाव के लिए 0.3 प्रतिशत डाक्लोरोवास घोल में भीगी रूई को कीट के प्रवेश द्वार में ठूंसकर गीली मिट्टी का लेप कर देते हैं। बाग प्रबन्ध के तरीकों तथा आवश्यक काट-छांट करके भी इन कीड़ों की रोकथाम की जा सकती है।

माईट: माइट अत्यन्त ही सूक्ष्म जीव है जो प्राय: सफेद एवं लाल रंग में पाये जाते है। ये जीव अनार की पत्तियों के ऊपरी एवं निचले सतह पर शिराओं के पास चिपक कर रस चूसते रहते हैं। माइट ग्रसि पत्तियां ऊपर की तरफ मुड़ जाती है और पूर्ण ग्रसित होने की दशा में पौधा पत्ती रहित होकर सूख जाता है। माइट का प्रकोप होते ही पौधों पर एक्साइड दवा के 0.1 प्रतिशत घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करना चाहिए।

सूत्रकृमि: सूत्रकृमि या निमैटोड अत्यन्त ही सूक्ष्म धागेनुमा या गोल जजीव होते है जो अनार की जड़ों में गांठे बना देती है। पौधों की पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं तथा मुड़ने लगती है। पौधों का विकास बाधित हो जाता है तथा उपज प्रभावित होती है।

सूत्रकृमि ग्रसित पौधों की जड़ों को खेद कर उसमें 50 मीलीबग, मोयला, थ्रिप्स आदि कीट भी अनार के पौधों के कोमल भागों का रस चूसते हैं जिससे कलियां, फूल व छोटे फल प्रारंभिक अवस्था में ही खराब होकर गिरने लगते हैं। इनकी रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस या डायमेथोएट कीटनाशी का 0.05 प्रतिशत (5 मि.ली. या आधा चम्मच दवा प्रति लीटर पानी में) घोल का छिड़काव करना चाहिए।

अवधिपार ऋण जमा कराने पर 2 से 9 प्रतिशत तक ब्याज दर में मिलेगी छूट,

जयपुर (कासं)। सहकारिता मंत्री अजय सिंह किलक ने बताया कि किसानों को बड़ी राहत देते हुए केन्द्रीय सहकारी बैंकों से जुड़े किसानों के ओवर ड्यू हुए ऋण को जमा कराने की तिथि 31 दिसम्बर, 2017 तक बढ़ा दी गई है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे किसानों के प्रति बहुत संवेदनशील है और उन्होंने किसानों की राहत के लिए कदम उठाने के लिए निर्देश दिए थे। किलक ने बताया कि इस योजना से ऐसे ऋणियों एवं किसानों को फायदा होगा, जो किन्हीं कारणों से अपने ऋणों का समय पर नहीं चुका पाए थे। ऐसे किसानों के लिए एक मुश्त समझौता योजना लागू की थी और यह योजना 30 जून तक लागू थी। अब ऐसे किसान जो 31 दिसम्बर तक ऋण का चुकारा करेंगे उन्हें दो से 9 प्रतिशत तक ब्याज दर में फायदा मिलेगा। सहकारिता मंत्री ने बताया कि 30 जून के बाद ऐसे ऋणी जो अपने अवधिपार ऋण जमा करा चुके हैं तथा योजना के दायरे में आते हैं, उन्हें भी योजना का लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि इस योजना में ऋण के अवधिपार होने की दिनांक से राशि चुकाने की दिनांक तक ऋण स्वीकृति पत्र में अंकित ब्याज दर या 10 प्रतिशत ब्याज दर, जो भी कम हो, साधारण ब्याज वसूल किया जाएगा। इस योजना से प्रदेश के लगभग 1 लाख 65 हजार किसानों को फायदा होगा और 300 से 400 करोड़ रुपये की किसानों को राहत मिलेगी। किलक ने बताया कि इस योजना में अधिक से अधिक बाकीदारों को शामिल करने तथा योजना के प्रावधानों को अधिक व्यावहारिक बनाने के लिए पूर्ववर्ती योजना के नियमों में ढील दी गई हैं। इस योजना के तहत वे सभी कृषि एवं अकृषि ऋण सम्मिलित किए गए हैं, जो कि एक अप्रेल, 2013 या इससे पहले ही अवधिपार हो चुके हैं।

कृषि सलाह
किसान भाई ध्यान देवें

मूंग, मोठ, चंवला: खरीफकी दलहनी फसलों जैसे मूंग, मोठ, चंवला, इत्यादि की पकी हुई फलियों की तुडाई कर लेवें।

मूली: मूली (पूसा रश्मि) की बुवाई करने के इच्छुक कृषक आवश्यक आदानों की अग्रिम व्यवस्था कर लेवें। मूली की बुवाई के लिये 10-12 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टेयर रखे एवं बुवाई से पहले 20 किलो नत्रजन, 48 किलो फास्फेरस तथा 48 किलो पोटाश प्रति हैक्टेयर की दर से देवें।

अगेती मटर : अगेती मटर लेने के इच्छुक कृषक खाली पड़े खेत को जुताई कर तैयार कर लेवें तथा आवश्यक आदानों की अग्रिम व्यवस्था कर लेवें । अर्किल, हरा बोना, जवाहर मटर-4, मटर अगेती-6, मटर (अगेती फसल) की उन्नत किस्में है ।

बैगन: बैगन की शरद कालीन फसल में छोटी पत्ती रोग के प्रकोप की सम्भावना है । इस रोग के प्रकोप से पत्तियाँ छोटी रह जाती है तथा गुच्छो के रूप में तनो के ऊपर उगी हुई दिखाई देती है । पूरा रोग ग्रस्त पौधा झाड़ीनुमा लगता है । इस रोग के नियंत्रण हेतु रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर देवे तथा मैलाथियॉन 50 ई.सी. एक मि.ली. प्रति लीटर पानी के हिसाब से छिड़काव करें।

अमरुद : अमरुद में फल मक्खी के प्रकोप की सम्भावना है । फ्ल मक्खी के नियंत्रण हेतु प्रभावित फ्लों को इकठ्ठा करके भूमि में गहरा गाड देवे तथा मैलाथियॉन 50 ई.सी. का एक मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

सृष्टि एग्रो परिवार आपका स्वागत करता है

सदस्यता फार्म

सदस्य का नाम : .....

संस्था का नाम : .....

पूरा पता : .....

ग्राम : .....तहसील .....

जिला ..... राज्य ..... पिन कोड

दूरभाष कार्य : ..... निवास .....

सदस्यता राशि

एक वर्ष : 151 ☐ तीन वर्ष 351 ☐ पांच वर्ष 501 ☐

कृपया हमें/मुझे सृष्टि एग्रो की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें।

सदस्यता राशि नकद/मनीऑर्डर/चेक/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में) शब्दों में .....

बैंक का नाम ..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक ..... दिनांक .....

स्थान ..... प्रतिनिधि का नाम ..... हस्ताक्षर सदस्य .....

दिनांक .....

एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

सृष्टि एग्रो

ग्रामीण विकास का सम्पूर्ण पाक्षिक समाचार पत्र

307, लिंकवे इस्टेट, लिंक रोड मालाड़ (प), मुंबई-400064 Tel. 022-66998360/61, Fax : 022-66450908,
E-mail : info@srushtiagronews.com, website : www.srushtiagronews.com

सब्जियों का सीजन, नुन्हेम्स के संग

सृष्टि एग्रो

नुन्हेम्स सब्जी बीजों से सब्जी फलों के उत्पादन को लेकर जो विश्वास किसानों को कंपनी पर है उसी विश्वास को कंपनी ने सैदव बनाए रखेगी। कंपनी ने अपने प्रयासों से किसानों के खेत-खेत जाकर किसानों को पौध तैयार करना, पौध संरक्षण, कीटों से बचाव व अधिक उत्पादन लेने के तरीके सिखाते हैं। हाल ही प्रदेश में नवलपुरा, शाहपुरा, विराटनगर, बस्सी के किशनगढ़, उमरेन सहित कई जगहों पर सफल किसान सम्मेलन का आयोजन किया। यहां किसानों को पौध तैयार करना (नर्सरी) व स्केटिंग (तारबंदी पर फल लगाना) ये सभी किसानों को सिखाया।

राजस्थान के लगभग हर क्षेत्र में कामयाब टमाटर पर फसल कंपनी ने अपनी छाप छोड़ी है। इस समय सर्दियों में बेलदार प्रजाति के टमाटर, अक्टूबर माह से जनवरी तक यूएस-2853 गोल व बेल वाले टमाटर की किसानों को सलाह दी गई है। इसे किसान अपने खेतों में लगाकर आने वाले सब्जी सीजन में फायदा ले सकते हैं। किसानों को अपने खेतों में टमाटर व मिर्च की खेती की योजना के लिए टमाटर फसल के सलाहकार कंपनी के अधिकारी शालीन चन्द्रा के मोबाइल नंबर पर संपर्क कसते हैं। मो. नं. 9887047422

मुख्यमंत्री राजे को मिला 'बेस्ट चीफ मिनिस्टर ऑफ द ईयर' का स्कॉच अवार्ड

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे को गुड गवर्नेंस, सूचना प्रौद्योगिकी, कौशल विकास तथा महिला स्वावलम्बन जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य एवं उपलब्धियों और राजस्थान को बीमारू प्रदेशों की श्रेणी से बाहर लाने के लिए 'बेस्ट चीफ मिनिस्टर ऑफ द ईयर' स्कॉच अवार्ड से सम्मानित किया गया। वहीं साथ ही राजस्थान को 'स्टेट ऑफ द ईयर' अवार्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया है।

मुख्यमंत्री के प्रतिनिधि के रूप में राजस्थान विधानसभा के उपाध्यक्ष राव राजेन्द्र सिंह ने नई दिल्ली में कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में स्कॉच ग्रुप द्वारा आयोजित समारोह में यह अवार्ड ग्रहण किए। समारोह में राजस्थान को विभिन्न श्रेणियों में कुल 57 अवार्ड दिए गए। समारोह के मुख्य अतिथि केन्द्रीय पर्यटन तथा इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री केजे अल्फोंस थे। अवार्ड समारोह में राव राजेन्द्र सिंह ने कहा कि भौगोलिक दृष्टि से देश का सबसे बड़ा और रेगिस्तानी प्रदेश होने के कारण राजस्थान में विकास की चुनौतियां अन्य प्रदेशों की तुलना में बहुत बड़ी हैं।

इसके बावजूद मुख्यमंत्री की दृढ़ इच्छाशक्ति, कड़े परिश्रम और कुशल नेतृत्व के फलस्वरूप राजस्थान में सुराज लाने का विजन मूर्त रूप ले रहा है। उन्होंने कहा कि हर क्षेत्र में आगे बढ़कर राजस्थान बीमारू राज्य की श्रेणी से बाहर आया है। समारोह में राजस्थान के श्रम, रोजगार और कौशल विकास आयुक्त कृष्ण कुणाल सहित अन्य अधिकारियों ने भी अवार्ड ग्रहण किए।

सृष्टि एग्रो
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
मोबाइल : 7728897568
jaipur@srushtiagronews.com
विज्ञापन मात्र एक कॉल की दूरी पर

उदित ओवरसीज प्रा.लि.

राजस्थान सरकार द्वारा उर्वरक अब मान्यता प्राप्त दरों व अनुदान पर उपलब्ध

फर्टिलाइजर
1. जिंक सल्फेट 21 प्रश.
2. जिंक सल्फेट 33 प्रश.
3. फेरस सल्फेट 19 प्रश.
4. कॉपर सल्फेट 24 प्रश.
5. मैग्नीशियम सल्फेट 9.6 प्रश.

बायो फर्टिलाइजर
1. राइजोबियम पाउडर
2. एजेटोबेक्टर पाउडर
3. पी.एस.बी. पाउडर

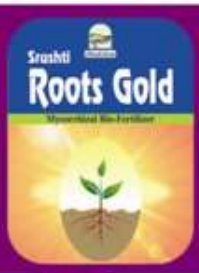

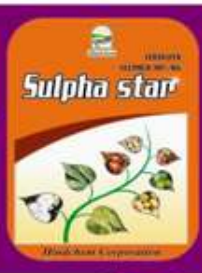

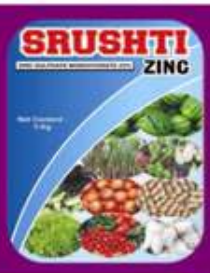

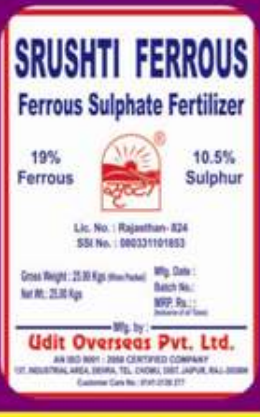

FERTILIZER
- SRUSHTI HIZINC (MICRONUTRIENT MIXTURE)
- ZINC EDTA 12%
- FERROUS EDTA 12%
- BORON 20%
- COPPER SULPHATE 24%
- SULPHUR 90% WG

BIO FERTILIZERS
- MYCORRHIZA (ROOTS GOLD)
- AZOSPIRILLUM
- PHOSPHATIC SOLUBILISING BACTERIA (PHOS UP)
- POTTASIUM MOBILIZING (POTA RISE)

WELCOME INQUIRY Contact : 7975653498 (Rajesh Sharma)

137, Industrial Area Dehra, Tehsil Chomu, Dist, Jaipur

स्वामी : सुरेश जी. शर्मा, प्रकाशक एवं मुद्रक विकाश शर्मा की ओर से जयपुर प्रिंटर्स, सी-565, 4-सी स्कीम न्यू लोहामण्डी रोड, सीकर रोड जयपुर से मुद्रित किया गया और प्लाट नं. बी-82 नीलगिरी कॉलोनी, नई अनाज मंडी के पीछे, विश्वकर्मा एरिया, जयपुर 302039 यहां से प्रकाशित किया। सम्पादक : सुरेश जी. शर्मा सत्यापित शीर्षक क्रमांक RAJHIN/2014/58645 : Tel. 0141-3130277, Mob. 7728897568, E-mail : jaipur@srushtiagronews.com